एक लोकप्रिय दलित एजेंडा बनाने का लक्ष्य

द हिन्दू

पेपर-1
(सामाजिक सशक्तिकरण)

यह आधुनिक उदार विचारों, पूंजीवादी विकास और लोकतांत्रिक मंथन का श्रेय है कि दलित अब एक अच्छी तरह से मान्यता प्राप्त सामाजिक और राजनीतिक ताकत हैं- बी.आर. बाबासाहेब अम्बेडकर. हालांकि, दलितों को एक स्वतंत्र धार्मिक समुदाय के रूप में ऊपर उठाने या लोकतांत्रिक लड़ाइयों में प्रमुख राजनीतिक ताकत के रूप में उनकी स्थिति में सुधार करने की अम्बेडकर की दृष्टि अभी तक साकार नहीं हुई है।

वर्तमान स्थिति

यह एक भयावह भय है क्योंकि वर्तमान सरकार नव उदारवादी आर्थिक नीतियों को अपनाने में आक्रामक रही है जो अक्सर ऐतिहासिक रूप से हाशिए पर रहने वाले समुदायों की मुक्ति के लिए सामाजिक न्याय सुरक्षा उपायों को कमजोर करती है। इसके अलावा, हिंदुत्व वैचारिक एजेंडा स्वतंत्र दलित दावों को सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की राजनीति के लिए एक चुनौती के रूप में देखता है। दलित सामाजिक-राजनीतिक आंदोलन के खिलाफ खतरों और निगरानी पर जोर दिया गया है, जो आज इसे एक निष्क्रिय शक्तिहीन स्थान बना रहा है।

सामाजिक न्याय के लिए एक दृष्टि

अम्बेडकर ने महसूस किया कि औपनिवेशिक शासन ने विभिन्न वंचित सामाजिक समूहों के लिए आधुनिक संस्थानों के दरवाजे खोल दिए, उनका लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं का एक अभिन्न अंग बनने के लिए स्वागत किया। संवैधानिक सिद्धांतों ने विशेष रूप से अस्पृश्य जातियों को अपनी शिकायतों को प्रभावी ढंग से उठाने की अनुमति दी और राज्य सत्ता और सामाजिक विशेषाधिकारों के उनके विशेष शोषण के लिए सामाजिक अभिजात्य नेतृत्व को फटकार लगाई। अम्बेडकर को उम्मीद थी कि नौकरी में आरक्षण या विधायी निकायों में दलित प्रतिनिधित्व की नीति राजनीतिक सत्ता के वास्तविक लोकतंत्रीकरण को प्रेरित करेगी एवं दलितों को आधुनिक संस्थानों में प्रभावशाली शेयरधारकों के रूप में पेश करेगी।

दूसरा, अम्बेडकर ने कल्पना की, कि गैर-राजनीतिक सार्वजनिक स्थानों (शैक्षणिक संस्थानों, मीडिया, संस्कृति और कला उद्योग) को लोकतांत्रिक बनाया जाना चाहिए, जिससे दलितों को हकदार नागरिकों के रूप में एक प्रभावी भूमिका निभाने की अनुमति मिल सके। इसके अलावा, राज्य एक संवेदनशील सार्वजनिक संस्कृति विकसित करने के लिए प्रभावी उपाय करेगा और जाति या समुदाय आधारित भेदभाव करने वाले अपराधियों को दंडित करेगा। आधुनिक भारत में, यह उम्मीद की गई थी कि लोग सामाजिक भेदभाव और उत्पीड़न के डर के बिना विश्वव्यापी संस्कृति के लाभों का आनंद लेंगे। अम्बेडकर का यह भी मानना था कि आधुनिकता को केवल अछूतों को एक विशेष

श्रेणी के रूप में ऊपर उठाने के लिए नहीं माना जाना चाहिए, जिसके लिए राज्य की सतत सहायता की आवश्यकता होगी। इसके बजाय, उन्होंने उम्मीद की कि दलितों को बोझिल सामाजिक पहचान (बौद्ध धर्म में परिवर्तित होकर) से बचना चाहिए और राज्य पर अपनी निर्भरता कम करनी चाहिए। उन्होंने दलितों को ऐतिहासिक रूप से वंचित समूहों के स्वाभाविक नेता होने की कल्पना की।

दलितों का दावा

अम्बेडकर के सामाजिक-राजनीतिक निर्देशों से प्रभावित होकर, सार्वजनिक क्षेत्र में दलितों का हस्तक्षेप सामाजिक सम्मान, स्वतंत्र सांस्कृतिक अधिकारों और राजनीतिक शक्ति की माँग करता रहा है। राज्य की सकारात्मक कार्रवाई नीतियों ने एक महत्वपूर्ण दलित वर्ग को मुख्यधारा के मध्य वर्ग के एक महत्वपूर्ण खंड के रूप में उभरने में मदद की है, जिससे उन्हें शहरी जीवन के लाभों का आनंद लेने की अनुमति मिली है। 1980 के दशक में बहुजन समाज पार्टी (बसपा) का आगमन दलित मध्यम वर्ग के प्रतिबद्ध समर्थन के कारण संभव हुआ। हालांकि, दलितों के भीतर के विभिन्न वर्गों ने सामाजिक न्याय आंदोलन के प्रति गंभीर लगाव नहीं दिखाया है और पारंपरिक सांस्कृतिक मूल्यों पर आधिपत्य बनाए हुए हैं, यहाँ तक कि दलित मुक्ति की राजनीति के विरोधी माने जाने वाले राजनीतिक विकल्पों की ओर भी बढ़ रहे हैं।

दूसरा, सामाजिक और सांस्कृतिक मोर्चे पर, दलितों ने खुद को एक मुखर और स्वतंत्र विकल्प के रूप में पेश किया। आज, कई शहरों में अम्बेडकर की आदमकद प्रतिमाएँ सार्वजनिक स्थानों पर दलितों की गरिमापूर्ण उपस्थिति का एक स्पष्ट चिह्न हैं। इसके अलावा, दलित प्रभावशाली सार्वजनिक कार्यक्रमों (संविधान दिवस का उत्सव), या क्रांतिकारी प्रतीकों की जयंती या सार्वजनिक जीवन में समानता और सम्मान की अपनी उन्नत भावना को प्रदर्शित करने के लिए ऐतिहासिक स्थलों पर बड़े पैमाने पर सभाओं का आयोजन करते हैं।

डॉ. अम्बेडकर का परिचय

डॉ. भीमराव अम्बेडकर का जन्म 14 अप्रैल 1891 में मध्य प्रदेश के महू में हुआ था इनका पूरा नाम डॉ. भीमराव रामजी अंबेडकर था। ये 14 भाई बहनों में सबसे छोटे थे। इनका बचपन शोषण, पीड़ा और भेदभाव के बीच गुजरा तथा ये हिंदू महार जाति से सम्बंधित थे। डॉ. अम्बेडकर का निधन 6 दिसंबर 1956 को दिल्ली में हुआ। इससे पहले 24 मई 1956 को डॉ. आंबेडकर जी ने घोषणा किया कि वो बौद्ध धर्म अपनाएंगे और 14 अक्टूबर 1956 को अपने कई अनुयायियों के साथ बौद्ध धर्म अपना लिया। उनका यह धर्म परिवर्तन जाति धर्म के शोषणों के प्रति एक प्रकार का विरोध था। उन्हें 1990 में मरणोपरांत भारत रत्न से सम्मानित किया गया।

शिक्षा

डॉ. अम्बेडकर 1907 में मैट्रिक परीक्षा पास की अम्बेडकर पहले दलित छात्र थे जिन्हें मुंबई के गवर्नमेंट हाई स्कूल में दाखिला मिला। बड़ौदा के महाराजा सयाजीराव गायकवाड़ ने अंबेडकर की प्रतिभा को देखते हुए उन्हें छात्रवृति की सुविधा दी। ये सुविधा उन्हें अमेरिका में रहने के लिए हर महीने 25 रुपये के रूप में मिलती थी। 1912 में राजनीति विज्ञान और अर्थशात्र में विषय में स्नातक की डिग्री हासिल की, 1915 में उन्होंने अपनी स्नातकोत्तर (एम.ए.) परीक्षा पास की, 1916 में कोलंबिया विश्वविद्यालय से पीएचडी किया तथा 1923 में डॉक्टर ऑफ साइंस की डिग्री से भी नवाजे गए।

डॉ. आंबेडकर के योगदान

- 1923 में, उन्होंने 'बहिष्कृत हितकारिणी सभा' (बहिष्कृत कल्याण संघ) की स्थापना की, जो दलितों के बीच शिक्षा और संस्कृति के प्रसार के लिए समर्पित थी। 1927 तक, अम्बेडकर ने अस्पृश्यता के खिलाफ सक्रिय आंदोलनों को शुरू करने का फैसला किया था। उन्होंने सार्वजनिक पेयजल संसाधनों को खोलने के लिए सार्वजनिक आंदोलनों और मार्च के साथ शुरुआत की। उन्होंने हिंदू मंदिरों में प्रवेश के अधिकार के लिए भी संघर्ष शुरू किया।
- 1927 के अंत में एक सम्मेलन में, अम्बेडकर ने जातिगत भेदभाव और "अस्पृश्यता" को वैचारिक रूप से उचित ठहराने वाले क्लासिक हिंदू पाठ, मनुस्मृति (मनु के कानून) की सार्वजनिक रूप से निंदा की, और उन्होंने औपचारिक रूप से प्राचीन पाठ की प्रतियां जलाई।
- 24 सितंबर 1932 को गांधी जी के साथ पूना समझौता किया, इसके तहत विधान मंडलों में दलितों के लिए सुरक्षित स्थान बढ़ा दिए गए। इस समझौते में अंबेडकर ने दलितों को कम्युनल अवार्ड में मिले अलग निर्वाचन के अधिकार को छोड़ने की घोषणा की लेकिन इसके साथ ही कम्युनल अवार्ड से मिली 78 आरक्षित सीटों की बजाय पूना पैक्ट में आरक्षित सीटों की संख्या बढ़ा कर 148 करवा लिया।
- 1940 के दशक में वो संविधान निर्माता के तौर पर सामने आए, आजादी मिलने के बाद वो कांग्रेस पार्टी की ओर से देश के पहले कानून भी मंत्री बनाए गए। 29 अगस्त 1947 को उन्हें नए संविधान मसौदा समिति का अध्यक्ष बनाया गया था।

दलितों ने खुद को वैकल्पिक सांस्कृतिक मूल्यों के समर्थक के रूप में पेश किया है और सार्वजनिक क्षेत्र का लोकतंत्रीकरण किया है।

तीसरा, यह चुनावी लड़ाई में है कि दलितों ने अपने बढ़ते हाशिए पर देखा है। एक सराहनीय मुख्यधारा की पार्टी के रूप में उत्तर प्रदेश में बसपा के समय-समय पर पतन के साथ, दलित-बहुजन नेतृत्व के तहत राष्ट्रीय शासन को चलाने की संभावना पटरी से उतर गई है। दिलचस्प बात यह है कि यह बीजेपी ही है जो अक्सर खुद को एक समावेशी पार्टी होने का दावा करती है, जो सबसे खराब दलित-बहुजन जातियों के हितों का प्रतिनिधित्व करती है। महाराष्ट्र, बिहार, तेलंगाना और तमिलनाडु में, हालांकि दलितों द्वारा प्रभावशाली सामाजिक और राजनीतिक लामबंदियां हैं, लेकिन इनमें राष्ट्रवादी दलों, विशेष रूप से केंद्र में भाजपा के प्रभुत्व को उलटने की सीमित क्षमता है।

डॉ. अंबेडकर की कुछ महत्वपूर्ण कृतियाँ: समाचार पत्र मूकनायक (1920), एनिहिलेशन ऑफ कास्ट (1936), द अनटचेबल्स (1948), बुद्ध और कार्ल मार्क्स (1956) इत्यादि।

अंबेडकर और गांधी जी

अंबेडकर महात्मा गांधी के विचारों में काफी अंतर था। एक इंटरव्यू में डॉ. अंबेडकर ने बताया था कि उन्होंने गांधी को कभी महात्मा नहीं कहा। डॉ. अंबेडकर का मानना था कि महात्मा गांधी को अनुसूचित जाति को लेकर भारी डर था कि वो सिख और मुस्लिम की तरह आजाद निकाय बन जाएंगे और हिन्दुओं को इन तीन समुदायों के समूह से लड़ना पड़ेगा, गांधी हर समय दोहरी भूमिका निभाते थे। अंग्रेजी समाचार पत्र में उन्होंने खुद को जाति व्यवस्था और अस्पृश्यता का विरोधी तथा लोकतांत्रिक बताया। लेकिन अगर आप गुजराती पत्रिका दीनबंधु को पढ़ते हैं तो आप उन्हें अधिक रूढ़िवादी व्यक्ति के रूप में देखेंगे।

जाति पर अम्बेडकर के विचार

अस्पृश्यता को समाप्त करके जाति व्यवस्था में सुधार की वकालत करने वाले गांधी के विपरीत, डॉ अंबेडकर ने एक अधिक कट्टरपंथी दृष्टिकोण रखा, जिसने जाति की संस्था को ही खारिज कर दिया। उन्होंने समकालीन उच्च जाति के हिंदुओं द्वारा समर्थित सुधारवाद को सहस्राब्दियों के भेदभाव को दूर करने के लिए अपर्याप्त के रूप में देखा। उनके अनुसार, जाति व्यवस्था के खिलाफ कोई भी विद्रोह तभी संभव होगा, जब उत्पीड़ितों ने स्वयं अपनी स्थिति और उत्पीड़न को दैवीय आदेश के रूप में खारिज कर दिया हो।

हकीकत में क्या है?

अम्बेडकर के बाद की दलित सक्रियता ने निश्चित रूप से अपनी उपस्थिति बढ़ाई है और सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्र को काफी हद तक लोकतांत्रिक बना दिया है। हालांकि पारंपरिक वर्ग और जाति के रिश्तों में बहुत सुधार नहीं हुआ है। जातिगत अत्याचार, हिंसा और हमलों के बढ़ते मामले सामाजिक मुक्ति के लिए दलितों की उम्मीदों को कम करने के लिए पर्याप्त है। इसके अलावा, विश्वविद्यालयों, न्यायपालिका, मीडिया और सांस्कृतिक उद्योगों जैसे आधुनिक संस्थानों में भी दलितों की भागीदारी हाशिये पर है।

निष्कर्ष

अम्बेडकर की जयंती (14 अप्रैल) पर, दलितों की गरिमापूर्ण सार्वजनिक उपस्थिति भले ही दिखाई दे, लेकिन उनमें से कुछ ही हैं जो बढ़ते राजनीतिक हाशिए पर जाने, सत्ता के संस्थानों में प्रतिनिधित्व की कमी और दलितों को ब्राह्मणवादी जातिवाद के चंगुल से आजादी की उनकी तलाश के बारे में उनके ठोस मुद्दों पर गौर करते हैं। एक लोकप्रिय दलित एजेंडा बनाने के लिए पुनर्विचार की आवश्यकता है जो कमजोर और हाशिए पर रहने वाले समुदायों को एक बड़ी मुक्तिदायी परियोजना के लिए लामबंद करता है।

संभावित प्रश्न (Expected Question)

प्रश्न : निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये–

1. डॉ. आंबेडकर ने 'बहिष्कृत हितकारिणी सभा' (बहिष्कृत कल्याण संघ) की स्थापना की, जो दलितों के बीच शिक्षा और संस्कृति के प्रसार के लिए समर्पित थी।
2. डॉ. आंबेडकर, गांधी जी को सदैव महात्मा के तौर पर माना।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1

(b) केवल 2

(c) 1 और 2 दोनों

(d) न तो 1 और न ही 2

Que. Consider the following statements–

1. Dr. Ambedkar founded the 'Bahishkrit Hitakarini Sabha' (Outcaste Welfare Association), dedicated to the spread of education and culture among Dalits.
2. Dr. Ambedkar always considered Gandhiji as a Mahatma.

Which of the statements given above is/are correct?

(a) Only 1

(b) Only 2

(c) Both 1 and 2

(d) Neither 1 nor 2

उत्तर : A

संभावित प्रश्न व प्रारूप (Expected Question & Format)

प्रश्न : भारत में सामाजिक सशक्तिकरण के लिए डॉ. भीमराव आंबेडकर द्वारा किये गए कार्यों एवं योगदान पर प्रकाश डालिए।

(150 शब्द)

उत्तर का दृष्टिकोण :-

- ❖ डॉ. भीमराव आंबेडकर का संक्षिप्त विवरण दीजिये।
- ❖ सामाजिक सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के लिए किस तरह कार्य किया-संविधान व समाज का उदाहरण देते हुए बताएं।
- ❖ वर्तमान में अम्बेडकर द्वारा किये गए कार्य कितना प्रासंगिक है, दिखाते हुए निष्कर्ष दीजिए।

नोट : अभ्यास के लिए दिया गया मुख्य परीक्षा का प्रश्न आगामी UPSC मुख्य परीक्षा को ध्यान में रखकर बनाया गया है। अतः इस प्रश्न का उत्तर लिखने के लिए आप इस आलेख के साथ-साथ इस टॉपिक से संबंधित अन्य स्त्रोतों का भी सहयोग ले सकते हैं।